सिर्फ मनुष्य नकलची नहीं होते

यह तो जानी-मानी बात है कि मनुष्यों में आदतें एक-दूसरे की नकल करके सीखी जाती हैं और धीरे-धीरे साथ रहते-रहते एक संस्कृति विकसित होती है। सवाल है कि क्या अन्य प्राणियों में भी ऐसा होता है, खास तौर से समूह में रहने वाले प्राणियों में? हाल ही में प्रकाशित शोध पत्रों का निष्कर्ष है कि कम से कम बंदरों और व्हेलों में ऐसा होता है।

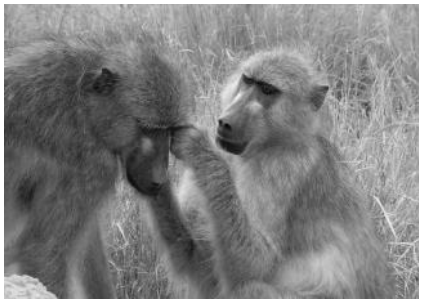

यूके के सेन्ट एण्ड्रयूज़ विश्वविद्यालय की प्रायमेट विशेषज्ञ एरिका नानडीवॉल और उनके साथियों ने जंगल में रहने वाले वर्वेट बंदरों (*Chlorocebus aethiops*) के दो समूहों का अध्ययन किया। उन्होंने इन दो समूहों के बंदरों को प्रशिक्षित किया कि वे एक खास रंग (गुलाबी या नीले) में रंगे मक्का के दाने ही खाएं और दूसरे रंग के दानों से परहेज़ करें। इसके बाद शोधकर्ता दल ने यह देखने के लिए इन्तज़ार किया कि जब इन समूहों में नए सदस्य आएंगे तो क्या होगा। नए सदस्य यानी प्रवासी नर अथवा नवजात बंदर शिशु।

देखा गया कि उक्त दोनों किस्म के नवागंतुक सदस्य उस समूह की सामाजिक परिपाटी का पालन करते हैं। शिशु बंदर उसी रंग के दाने खाते थे जो उनकी मां खाती थी। जो दस वयस्क बंदर अन्य समूहों (जिनमें रंग की वरीयता भिन्न थी) से उस समूह में आए थे, उनमें से सात ने उस समूह की रंग संस्कृति अपना ली। यानी सीखने की प्रक्रिया कर-करके नहीं होती बल्कि सामाजिक रूप से होती है। यह अध्ययन अपने किस्म का अनोखा अध्ययन है? इसमें प्राकृतिक स्थिति में इन चीज़ों को देखा गया है।

दूसरा अध्ययन एक छात्र जेनी एलेन ने किया। एलेन के नेतृत्व में इस दल ने कूबड़ वाली व्हेलों (*Megaptera novaeangliae*) के व्यवहार के 27 वर्षों के आंकड़ों का उपयोग किया।

कूबड़ वाले व्हेलों की विशेषता है कि वे भोजन पाने के लिए मछलियों के किसी झुंड के नीचे से बुलबुले छोड़ती हैं। मछलियां इन बुलबुलों में फंसने से बचने के चक्कर में एक साथ आ जाती हैं। तब व्हेल उस पूरे झुंड को निगल जाती है। मगर 1980 में कुछ शोधकर्ताओं ने एक नई बात देखीः एक कूबड़वाली व्हेल ने बुलबुले वाली करामात करने से पहले पानी की सतह पर अपनी पूंछ के फावड़े जैसे भाग (फ्लूक) से छपाका मारा। उस साल 150 भक्षण घटनाओं में ऐसा एक ही बार हुआ। मगर 2007 तक उस स्थान (मैन की खाड़ी) पर 37 प्रतिशत कूबड़वाली व्हेल इस तकनीक का उपयोग करती देखी गईं। यह इतनी प्रचलित तकनीक बन चुकी थी कि वैज्ञानिकों ने इसे एक नाम भी दे दिया - लॉबटेल भक्षण विधि।

एलेन और उनके साथी यह जानना चाहते थे कि लॉबटेल विधि इतनी प्रचलित कैसे हो गई। इसके लिए उन्होंने ग्लाउसेस्टर के व्हेल सेंटर ऑफ न्यू इंग्लैण्ड द्वारा 1980-2007 के बीच एकत्रित आंकड़े देखे। विश्लेषण के पीछे मान्यता यह थी कि जो सदस्य ज़्यादा समय साथ-साथ बिताते हैं, वे एक-दूसरे के व्यवहार को ज़्यादा प्रभावित करते होंगे। एलेन के विश्लेषण से पता चलता है कि 87 प्रतिशत व्हेलों ने यह तकनीक अन्य व्हेलों से सीखी है।

अध्ययन दल को यह तो पहले से ही पता था कि कूबड़ वाली व्हेलों में गीतों को सांस्कृतिक रूप से हस्तांतरित किया जाता है। अपने इस नए अध्ययन के आधार पर अब उनका कहना है कि प्राणियों में सामाजिक रूप से सीखने की बात को ज़्यादा गंभीरता से लिया जाना चाहिए। ***(स्रोत फीचर्स)***